RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

हिंसात्मक अपराध को रोकने में सहायक : गाँधीवादी साधन

चेनाराम जीनगर

शोधार्थी, राजनीति विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

गाँधीजी के विचारों और आदर्शों का ही दूसरा नाम गाँधीवाद है। वर्तमान में, गाँधीजी के इन्हीं विचारों तथा आदर्शों को "गाँधी दर्शन" "गाँधीवादी राजनीतिक दर्शन" तथा "गाँधीवाद" इत्यादि नामों से जाना जाता है। इन विचारों तथा आदर्शों को भिन्न–भिन्न नाम इसलिये दिये है कि गाँधीजी स्वयं किसी 'वाद' सम्प्रदाय या सिद्धान्त में विश्वास नहीं करते थे और न ही अपने पीछे किसी प्रकार का 'वाद' छोड़ना चाहते थे।

हिंसात्मक अपराधों को रोकने में गाँधीजी के विचार एवं सिद्धान्त दोनों सहायक रहे है, वर्तमान में गाँधीवादी तरीकों एवं साधनों के आधार पर बड़े से बड़े अपराध में सुधार लाया जा सकता है।

गाँधी सत्य, अहिंसा, प्रेम, भ्रातृभाव आदि के पुजारी थे तथा इनकी व्याख्या करते हुए वे व्यक्ति को हिंसात्मक अपराधी प्रवृत्तियों से दूर करना चाहते थे। वे राजनीति को पवित्र करना चाहते थे तथा उसे धर्म और न्याय से बांधना चाहते थे।

बी.पी. सीतारमैया के शब्दों में *"गाँधीवाद सिद्धान्तों का मतों का, नियमों का, विनियमों का और आदेशों का समूह नहीं है। वह जीवन शैली या जीवन दर्शन है। यह एक नई दिशा की ओर संकेत करता है तथा मनुष्य के जीवन तथा समस्याओं के लिए प्राचीन समाधान प्रस्तुत करता है। गाँधीवाद एक ऐसा दर्शन है जो सबके कल्याण की बात करता है, हिंसक शस्त्रों के स्थान अहिंसक साधनों को अधिक श्रेष्ठ मानता है। शत्रुता के स्थान पर मित्रता और घृणा के स्थान पर प्रेम का भाव सिखाता है, इसमें कार्य की प्रेरणा का स्रोत सत्य, धर्म, और ईश्वर है। इसमें छल, कपट, स्वार्थ, क्रूरता, हिंसा, द्वेष इत्यादि विकृत प्रवृत्तियों का स्थान नहीं। गाँधीवाद साधन एवं साध्य की पवित्रता पर बल देता है।"*

गाँधीजी ने 'हरिजन सेवक' में 20.03.1937 को उन्होंने स्वयं लिखा है कि *"मनुष्य–मनुष्य के बीच असमानता का, ऊँच–नीचपन का विचार बुरा है पर इस बुराई को मैं मनुष्य के हृदय से तलवर (हिंसा) के बल पर नहीं निकालना चाहता।"*

गाँधीजी हिंसा एवं अपराधी प्रवृत्तियों से लड़ने के लिए एक सच्चे समाजवाद की स्थापना के पक्षधर थे, गाँधीजी का समाजवाद, नैतिकता, हिन्दुत्व, ग्राम्य मानवतावादी और प्रजातंत्र पर खड़ा था, जिसे केवल राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर, कत्ल या रक्तपात से स्थापित नहीं किया जा सकता। सच्चा समाजवाद अनुग्रह, सद्भावना और प्रेम पर आधारित होता है।

गाँधीजी कार्ल मार्क्स के राज्य विहिन, वर्ग विहिन समाज के समर्थक थे वहीं दूसरी ओर, मार्क्स की इतिहास की भौतिक व्याख्या, वर्ग–संघर्ष और हिंसा के प्रयोग के घोर विरोधी थे, वे केवल कार्यों में बल्कि विचारों और भावनाओं में भी हिंसा को स्वीकार नहीं करते थे। वे उदारवादी और नैतिकतावादी भी थे।

महात्मा गाँधी द्वारा 1925 में 'यंग इण्डिया' में बताए गए सात सामाजिक पाप है –

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

गाँधीजी ने बढ़ते हुये हिंसात्मक अपराधों को रोकने के लिए अनेक छोटे–बड़े साधनों का प्रयोग किया।

गाँधीजी के लिए धर्म और राजनीति एक ही कार्य के दो नाम है। उनका विश्वास है कि राजनीति का उद्देश्य धर्म के उद्देश्य की तरह, उन सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन लाना है जो अन्याय, अत्याचार, तथा शोषण पर आधारित है तथा समाज में न्याय तथा न्याय परायणता की व्यवस्था हो। मानव का प्रत्येक कार्य आदर्श न्याय से सम्बन्धित है।

गाँधीजी ने भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता की लड़ाई में किसी भी पहलू पर अपवित्र (हिंसक) साधनों का समर्थन नहीं किया, उस समय भी नहीं जब उत्तेजना सरकार द्वारा प्रोत्साहित होती थी। गाँधीजी के लिए अपवित्र साधनों का प्रयोग तो दूर उनकी कल्पना भी त्याज्य थी। गाँधीजी छल, कपट, हत्या, अहिंसा और पशु बल के द्वारा स्वराज्य प्राप्त करने के इच्छुक नहीं थे। उनके शब्दों में *"मैं तो अहिंसा और सत्य हेतु देश को होमने के लिए तैयार हूँ, देश के लिए अहिंसा और सत्य को नही।"*

वर्तमान समय में दिनों–दिन हिंसात्मक अपराधी प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही है जिनसे लड़ने के लिए गाँधीजी ने सत्य एवं अहिंसा पर सबसे ज्यादा बल दिया।

उत्पीड़न या अन्याय के रूपों का विरोध करने के तरीके के रूप में अहिंसक नागरिक अवज्ञा में गाँधी की गहरी प्रतिबद्धता और अनुशासित विश्वास ने कई बाद के राजनीतिक चित्रों को प्रेरित किया, तथा हिंसात्मक अपराध, बेरोजगारी, महंगाई तथा तनावपूर्ण वातावरण में आज बार–बार यह प्रश्न उठाया जा रहा है कि गाँधी के सत्य व अहिंसा पर आधारित दर्शन और विचारों की आज कितनी आवश्यकता महसूस की जा रही है।

गाँधीजी का सत्याग्रह का पूर्ण सिद्धान्त अहिंसा पर आधारित है। जहाँ अब तक विश्व के पास अन्याय को दूर करने का युद्ध के रूप में, एक ही विकल्प के रूप में सत्याग्रह के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया। नैतिक आधारों पर अन्याय का प्रतिरोध करने का व्यक्ति को अधिकार देने का श्रेय गाँधीजी को है। गाँधीजी ने हिंसात्मक अपराध को सुलझाने का प्रयत्न अपने दर्शन के आधार पर किया।

आज पूरा विश्व अपराध एवं आतंकवाद से ग्रसित है। उसका मूल कारण व्यक्तियों या समूहों की मांग मनवाने के लिये अनैतिक और हिंसा का सहारा लेना है, यदि वे लोग भी मानवतावादी तरीके से अहिंसा का मार्ग अपनाएं और गाँधीजी के सत्याग्रह का अनुकरण करें तो न केवल उनकी मांगों पर सहानुभूति पूर्वक विचार होगा अपितु पूरे विश्व में शांति और भाईचारा होगा। आज का नौजवान बिना श्रम या मेहनत के उच्च जीवन व्यतीत करना चाहता है। जिसके लिए अनेक प्रकार के हिंसात्मक तरीकों को अपनाने की कोशिश की जाती है। गाँधीजी इन तरीकों में बदलाव लाने के पक्षधर है, उनके अनुसार अच्छा जीवन प्राप्त करने के लिए नैतिक एवं व्यवहारिक आयामों को अपनाना चाहिए।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

गाँधीजी अहिंसा के पुजारी होने के नाते भली–भाँति समझ चुके थे कि हिंसा की बात चाहे किसी भी स्तर पर क्यों न की जाए, परन्तु वास्तविकता यही है कि हिंसा किसी भी समस्या का सम्पूर्ण एवं स्थायी समाधान कतई नहीं है। जिस प्रकार आज के दौर में आतंकवाद व हिंसा विश्व स्तर पर अपने चरम पर दिखाई दे रही है तथा चारों और गाँधी के आदर्शों की प्रासंगिकता की चर्चा छिड़ी हुई है, ठीक उसी प्रकार गाँधीजी भी अहिंसा की बात उस समय करते थे जबकि हिंसा अपने चरम पर होती थी। उदाहरण के तौर पर 1914 से लेकर 1918 तक प्रथम विश्व युद्ध के दौरान गाँधीजी ने अहिंसा की आवाज बुलंद की। इसी प्रकार 1939 से 1944 तक चलने वाले द्वितीय विश्व युद्ध की भीषण हिंसा के समय भी गाँधीजी अहिंसा परमोः धर्मः जैसे शांति सूत्र का प्रचार व प्रसार करते दिखाई दिए। गाँधीजी हथियारों के विरुद्ध हथियार प्रयोग करने के बजाए हथियारों के विरुद्ध विचारों का प्रयोग करने की बात कहते थे। उन्होंने अन्याय व असमानता के विरुद्ध युद्ध करने का एक ऐसा इन्सानी तरीका समाज को दिया था। जिसमें किसी को अपना दुश्मन बनाने की जरूरत नहीं पड़ती थी और न ही हथियार उठाने की आवश्यकता थी। वे समाज को अपने विचारों से सहमत करने तथा उसका हृदय परिवर्तन करने में विश्वास रखते थे। द्वितीय विश्व युद्ध में हुई भयंकर जान व माल की तबाही के बाद भी जब युद्ध से कोई नतीजा हासिल नहीं हुआ। तब आखिरकार संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1945 में गाँधीजी के ही सिद्धान्तों के अनुरूप यह घोषणा की कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। अतः बातचीत के माध्यम से ही सभी मामले सुलझाएं जाने चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ के इसी शांति प्रस्ताव पर संघ के सभी सदस्य देशों ने हस्ताक्षर किए थे।

महात्मा गाँधी साध्य से अधिक साधन पर ध्यान देना आवश्यक मानते थे। उनका कहना था कि यदि साध्य पवित्र और मानवीय है तो साधन भी वैसा ही शुद्ध, वैसा ही पुनीत और वैसा ही मानवीय होना चाहिए। हम देखते है कि साध्य और साधन की समाज पवित्रता पर बल देना और उसका आश्रय ग्रहण करना उनकी साधना रही है। उनके इन मौलिक विचारों ने मानव समाज के विकास के इतिहास में एक अत्यन्त उज्ज्वल और पवित्र अध्याय की रचना की है। गाँधीजी में हिंसा, अपराध, भ्रष्टाचार, आतंकी घटनाओं अदि से निपटने के लिए पवित्र साधनों पर बल दिया है तथा हिंसा से लृप्त राजनीति को स्वच्छ बनाने के लिए नैतिक एवं व्यवहारिक राजनीति पर ज्यादा बल दिया है।

महात्मा गाँधी 20वीं शताब्दी के दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिक और आध्यात्मिक नेताओं में से एक माने जाते है। वे पूरी दुनिया में हिंसा, अपराध, शोषण, अत्याचार, गरीबी, भूखमरी आदि हिंसात्मक साधनों का सहारा लिये बिना नैतिक साधनों के रूप में, शांति, प्रेम, अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, मौलिक–शुद्धता और करूणा आदि उपकरणों के सफल प्रयोगकर्त्ता के रूप में याद किये जाते है, जिसके बल पर उन्होंने उननिवेशवादी सरकार के खिलाफ पूरे देश को एकजुट कर आजादी का मार्ग दिखाया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. महात्मा लाईफ ऑफ मोहनदास करमचंद गाँधी – डी.जी. तेन्दुलकर, बम्बई, 1951
2. मीडिया ऑफ इंस्ट्रक्शन एम.के. गाँधी – भारतन कुमारप्पा द्वारा संपादित, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद, 1954
3. भारतीय राजनीति – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 2019
4. हिन्दु स्वराज – एम.के. गाँधी सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2014
5. जाति के विरुद्ध गाँधी का संघर्ष – निशिकान्त कोलगे, ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी, 2019
6. महात्मा गाँधी – लुई फिशर, साधना प्रकाशन, 1951
7. गाँधी भारत से पहले – रामचन्द्र गुहा।, 2015